सनातन गुरु येसु की वाणी

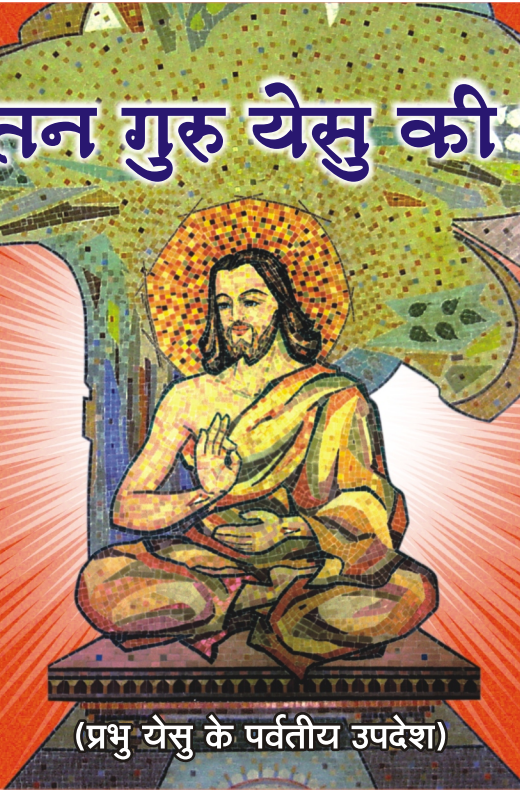

(प्रभु येसु के पर्वतीय उपदेश)

पृष्ठ संख्या

धन्य वचन 4
नमक एवं ज्योति 7
नियमों की अटलता 9
क्रोध का त्याग 11
क्षमादान 13
इंद्रिय-संयम 15
शपथ एवं सच्चाई 17
अहिंसा 19
सत्यप्रेम 21
गुप्त-दान महान 24
एकांत प्रार्थना 26
प्रभु की प्रार्थना 28
क्षमाशीलता 30
वास्तविक उपवास 31

पृष्ठ संख्या

अपरिग्रह 32
दृष्टि की पवित्रता 34
प्रभु की अनन्य शक्ति 35
ईश्वर पर विश्वास 36
आत्म निरीक्षण 40
पितु हृदय महान 43
उत्तर आचरण 45
प्रभु पथ : सत्य मार्ग 45
धर्म-पाखण्डियों से सचेत 46
स्वर्ग प्रवेश मार्ग 49
दृढ़-भक्ति 51
शत्रु से कर ले यारी 54
प्रार्थना 55

सनातन गुरु येसु की वाणी

(प्रभु येसु के पर्वतीय उपदेश)

सोरठा

चढ़ये प्रभु तब शैल,
लखी भीड़ कण सिन्धु तट।
शिष्य आये सब गैल,
गुरुवर बैठे जब निकट।।

गिरिवर-प्रभुवर देख, प्रेम-प्यासे भीर-जन।
निरन्तर जीवन देन, बपयि अमृत-वचन।।

सनातन गुरु येसु भीड़ को देखकर पहाड़ पर चढ़ गये, और जब बैठे तो चेले उनके पास आये। तब प्रभु उन्हें यह उपदेश देने लगेः

धन्य वचन

चौपाई

धन्य धन्य जो मन के दीना।
"स्वर्ग राज्य" उन वश हरि कीना।।
धन्य धन्य जो शोकही भाई।
करि है प्राप्त शांति अधिकाई।।
धन्य धन्य जिन नम्रही धारी।
वे होंगे धरणि अधिकारी।।
धन्य जिनके हिय करुणा आई।
होगी दया उन ही पर भाई।।
धन्य धन्य शुद्ध मन जिनके।
चक्षु द्रष्ट होंगे हरि उनके
धन्य धर्म - हित - प्यासे जन-जन।
पहियै तृप्ति, तृप्ति होहियै मन।।

धन्य धन्य जा मेल करावें।
वे ईश्वर के पुत्र कहावै।।
अति दुख भोग धर्म के नाते।
धन्य उन्हें जो नहिं घबराते।।
स्वर्ग राज्य उन ही का भाई।
मिलहिं कृपा प्रभु जिन्हें ढिलाई।।
धन्य तुम्हें मम हेतु सताये।
झूठ बोल अति निद कराएं।।
सब विधि बकैं विरुद्ध तुम्हारे।
मान आनंद मगन वन सारे।।

दोहा

भावी कथकन घर हिये, सब दुख हितकर जान।
तुम से पूरब जिन सही, महा विपत्ति तज मान।।

"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सांत्वना पायेंगे। धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जायेगी। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे। धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताये जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बातें कहें– आनन्दित और मग्न हो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान् है। उन्होंने तो उन नबियों को भी जो तुमसे पहले हुये इसी प्रकार सताया था।

नमक एवं ज्योति

धरणि नमक हो तुम जन सारे।
नमक स्वाद बिगड़े यदि प्यारे।।
कौन वस्तु जो करे नमकीना?
किसी काम न आये प्रवीणा।।
बाहर फेंके जोड़ सब लाएं।
जन-चरनन-तल रौंदा जाये।।
जगत ज्योति तुम हो जन सारे।
गिरिका-नगर बसा छिपही नहिं प्यारे।।
दीप न जला रखैं कोई नीचे।
राखत सब जन दीवट के ऊँचे।
हो उजियार भवन सब तासें।
मुदित बनत सब जन तम नासें।

चमके ज्योति जनन बिच ऐसे।
चमकत दीपक-दीवट पे जैसे।।
लख जिससे तुम्हरे भल कामा।
करै स्तुति, प्रभु पितु नामा।।

"तुम पृथ्वी के नमक हो। पर यदि नमक अपना स्वाद खो बैठे तो वह फिर किससे नमकीन किया जायेगा? वह किसी काम का नहीं रह जाता केवल इसके कि बाहर फेंका जाये और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाये। तुम जगत की ज्योति हो। पर्वत पर बसा हुआ नगर छिपाया नहीं सकता। लोग दीपक को जलाकर टोकरी के नीचे नहीं परन्तु दीवार पर रखते हैं, और वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें।

नियमों की अटलता

यह नहिं समझी है मम भाई।
सब को प्रभु उपदेश सुनाई।।
भविष्यद और धर्म के नियमा।
लोप करन को मैं जग जन्मा।।
नहिं लोपन, करन उन्हें पूरे।
आया देखे रहे अधूरे।।
नभ– धरणि भले टर जाई।
नियम टरै न एक बूंद भाई।।
सच सच कहुं, सुनो जन प्यारे।
जगत-उन्नति प्रीति उर धारे।।
घट से घट आज्ञा जो तोरे।
सोई जन शिक्षहि प्रीति न मोरे।।

स्वर्ग–राज्य बह नीच कहावै।
सब समझो जिनके मन भावे।।
पालहिं शिक्षहिं इन्हें जो कोई।
स्वर्ग राज्य में बड़ ऊ होई।।
तुमसे कहता है प्रिय भाई।
कोविद कर्मी से बड़िताई।।

दोहा

जिनके हृदय सत्य नहिं, सुनो सभी प्रिय भ्रातृ।
स्वर्ग प्रवेश वह न करे, नरक जले अकुलात।।

"यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूँ। नष्ट करने नहीं, परन्तु पूर्ण करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, व्यवस्था में से एक मात्रा या बिन्दु भी, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाये, नहीं

टलेगा। इसलिए जो भी इन छोटी से छोटी आज्ञाओं को तोड़ेगा और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देगा, वह परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा कहलायेगा; परन्तु जो उनका पालन करेगा और दूसरों को भी सिखायेगा, वह परमेश्वर के राज्य में महान् कहलायेगा। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम परमेश्वर के राज्य में कभी प्रवेश न कर पाओगे।

क्रोध का त्याग

पूर्व कही सुनी यह वाणी।
करे न हत्या कोई प्राणी।।
जो जन करे प्राण की हानी।
भोगे न्याय दंड अभिमानी।।
मैं कहता तुमसे पर बाता।।
''करै क्रोध'' जो ऊपर आता।

होगा दंड योग्य वह भाई।
पापी दोषी समझा जाई।।
''कायर'' जो भ्रात को कह है।
सभा-दण्ड-बीच वह पर है।।
''अरे मूर्ख'' कहैं जो लोगू।
नरक–अग्नि–दण्ड के योगू।।

''तुम सुन चुके हो कि पूर्वजों से कहा गया था, 'हत्या न करना' और 'जो हत्या करेगा, वह न्यायालय में दण्ड के योग्य ठहरेगा।' पर मैं तुमसे कहता हूँ कि हर एक जो अपने भाई पर क्रोधित होगा वह न्यायालय में दण्ड के योग्य ठहरेगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह सर्वोच्च न्यायालय में दोषी ठहरेगा; और जो कोई कहेगा, 'अरे मूर्ख', वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।

क्षमादान

दोहा

इससे यदि निज भेंट ले,
वेदी निकट तू जाई।
औंचक आये जो स्मृति,
कुछ विरुद्ध मम भाई।

सोरठा

सुनो खोल निज कान,
तजो भैंट वही सामने।
प्रथमहि सभी सुजान,
करो मिलाप निज भ्रात से।

जब तक पथ में विरोधि साया।
करो मिलाप तुरत गहि भाया।।

सुनो भ्रात कहीं अस नहीं होई।
मुक्त करन हित फिर नहिं कोई।।
प्रभु को सौंपे तुम्हार विरोधी।
वह सौंपे पयादन्ह क्रोधी।
बन्दी–घर तू डाला जाये।
निज कृत कर्म-फल तह पाये।।
सत्य कहुं मैं तुमसे भाई।
भरो न जब तक पाई पाई।।
तब तक न होय तोर उद्धारा।
यह मम वचन टरै नहि टारा।।

इसलिए यदि तुम अपनी भेंट वेदी पर लाये और वहाँ तुझे स्मरण आये कि मेरे भाई को मुझसे कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल कर लें और तब आकर अपनी भेंट चढ़ाओ। जबकि तू अपने वेदी के साथ मार्ग पर ही हैं तो उससे शीघ्र

मित्रता कर ले, कहीं ऐसा न हो कि वादी तुझे न्यायाधीश को सौंप दे, और न्यायाधीश तुझे अधिकारी को, और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाये। मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक तू पैसा पैसा चुका न देगा तब तक वहाँ से छूटने न पायेगा।

इंद्रिय-संयम

तुमने सुनी यह पूर्व उचारी।
होवे न कोई जन व्यभिचारी।।
पर मैं कहुं तुमसे यह बानी।
जान जगत जन बहु अज्ञानी।।
स्त्री कुदृष्टि लखहिं जो कोई।
उस संग मन व्यभिचारी होई।।
देत चोट यदि तुव चखु दाई।
उसे फेक निकाल वा ठाई।।

देत चोट यदि तुव कर दायां।
काट उसे विलग कर काया।।
सत्य कहूँ मैं, तुझे यह नीका।
त्याग सकल मल, मद, मन ही का।।

दोहा

तुम्हारे लिए यह भला,
सुनो भ्रात चित्त लाय।
एक अंग तन से कटै,
सब तन नरक न जाय।।

"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना', परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी स्त्री को कामुकता से देखे, वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दाहिनी आँख तुझसे पाप करवाये तो उसे निकालकर दूर फेंक दें, क्योंकि तेरे लिए यही उत्तम है कि तेरे अंगों

में से एक नाश हो इसकी अपेक्षा कि तेरा सारा शरीर नरक में डाला जाये। यदि तेरा दाहिना हाथ तुझसे पाप करवाये तो उसे काटकर दूर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही उत्तम है कि तेरा एक अंग नाश हो जाये, अपेक्षा इसके कि तेरा सारा शरीर नरक में डाला जाये।

शपथ एवं सच्चाई

तुम जन सुनी फिर पूर्व प्रवाना!
भला न तुम्हें शपथ का खाना।।
प्रभु हित करो शपथ निज पूरी।
निज अभिलाषा राखे दूरी।।
हमहिं कहु पर तुम्हें सुजाना।
कभी न शपथ स्वर्ग की खाना।।
के कारण तुम शपथ न खयऊ।

वे सिंहासन ईश-पुत्र भयेऊ।।
नहिं धरि की, वह हरि-पद-चौकी।
बिगड़े तेरा–सभी द्व-लोकी।।
नहिं भ्रात किन्हीं तीरथ-धरती।
जहाँ निवासत प्रभु दुख-हरती।।
अपने शीश-शपथ नहिं कीजे।
नहीं तोड़ना हरि की लीजै।।
यह भी तेरे हाथ न भाई।
श्याम–श्वेत एक बाल बनाई।।
''हां की हां'' अरु ''नहिं की नाहीं''।
हो न तुम्हारी बात बढ़ाई।।

दोहा

देखी से अति जो कहै, निज मन बात बढ़ाय।
असत्य, बुराई, मूल, बह, महा कुमति उपजाय।।

"फिर, तुम सुन चुके हो कि पूर्वजों से कहा गया था, 'तुम झूठी शपथ न खाना, पर प्रभु के लिए अपनी शपथें पूरी करना।' परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है नहीं धरती की, क्योंकि वह उसके चरणों की चौकी है; न ही यरुशलेम की, क्योंकि यह महाराजाधिराज का नगर है। अपने सिर की भी शपथ न खाना, क्योंकि तू अपने एक बाल को भी सफेद या काला नहीं कर सकता। परन्तु तुम्हारी बातें हां की हां अथवा नहीं की नहीं हो, क्योंकि जो कुछ इनसे अधिक होता है, शैतान की ओर से होता है।

अहिंसा

पूर्व सुनी कही यह बानी।
कथा भविष्यद् जो रहे पुरानी।।
चखु पलटे चखु, दन्त हित दांता।

जो जैसा कर्म कर लाता।।
पर मैं कहता यह तुम ताई।
करो न सामना बुरे का भाई।।
जो गाल तनु चपन लगावे।
दूसर गाल फिर उन्हें फिरावें।।
तुझ पर जो अभियोग चलहिए!
अऊर वस्त्र भी लेवै चाहिए।।
उसे न रोक दूसर हित जन हे।
निज कृत कर्म, आप वह भर है।।
एक कोस बेकार जो करिहै!
द्वै कोस उन संग में चलिहै।।
जो मांगे, कर नहिं नाहीं।
मुँह न मोड़, उधार के चाहीं।।

"तुमने सुना है कि कहा गया था, 'आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत।' परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना वरन् जो तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे तो उसे कोट भी ले लेने दे। और यदि कोई तुझे बेगार में एक किलोमीटर ले जाये तो उसके साथ दो किलोमीटर चला जा। जो तुझसे मांगे उसे दे, और जो तुझसे उधार लेना चाहे उससे मुँह न मोड़।

सत्यप्रेम

पूर्व सुनी कथी यह बाचा।
रख प्रेम पड़ोसी संग सांचा।।
बैरी संग बैर तुम कीजे।
अंत समय तक दाव निज लीजै।।
पर मैं कहूँ, सुनो यह भ्राता।

परम प्रतीति पितर पर लाता।।
राखी प्रेम निज बैरी ताईं।
निज दुखद-हित, विनय कर भाई।।
ठहरोगे तब पिता संताना।
स्वर्ग-धाम जिन सभी बखाना।।
भले बुरे दोनों पर भ्राता।
निज रवि वह सब हित चमकाता।।
सज्जन-दुष्ट दोनों पर भाई।
उठा जलद, जल देत गिराई।।
इससे यदि तुम उन्हीं के प्रेमी।
करत प्रेम जो तुहि नित नेमी।।
क्या फल होगा हेतु तुम्हारे?
करत न ऐसा ही सब क्या रे।।
यदि प्रणवो केवल निज भ्राता।
कौन करभ करते बड़ ताता?

दोहा

करत न ऐसहिं क्या सभी, और जाति सुनु भ्रात?
प्रभु-भक्ति वे न करहिं, न यह प्रभु की सुहात।।
इससे तुमको यह भला, पूर्ण बनो सब भ्रात।
जैसे पूर्ण तुम्हार रहे, स्वर्ग-निवासी तात।।

"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'तू अपने पड़ोसी से प्रेम करना और शत्रु से वैर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम्हें सताते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो जिससे कि तुम अपने पिता परमेश्वर की सन्तान बन सको, क्योंकि वह अपना सूर्य भलों और बुरों दोनों पर उदय करता है, और धर्मियों तथा अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम उनसे प्रेम रखते हैं तो तुम्हें क्या प्रतिफल मिलेगा? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते? यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करते हो तो कौन सा बड़ा कार्य करते हो? क्या अविश्वासी भी ऐसा ही नहीं करते? अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारी पिता परमेश्वर सिद्ध है।

गुप्त-दान महान

कर न कभी दिखावन हेतू।
निज भले कर्म, रहो सचेतू।।
निज तो तुम्हारे फल भाई।
जाएंगे सब तुरत नसाई।
निज पितु से जो स्वर्ग निवासी।
कुछ न पेहो, सुनो जन-रासी।।
इससे दान करे तू जब ही।
बजवा न निज पागे तुरही।।
जैसे सभा, पथ में जाहीं।
करते ढोंगी लोग सदा ही।।
जिससे उसकी करैं बढाई।
मैं तुम से सच कहता भाई।।
पाय चुके वे निज फल सारे।

प्रभु यीशु अस वचन उचारे।।
इससे गुप्त होय जब दाना।
देखे तब तुम पिता सहाना।।
दान करे कर तुम्हरो दायां।
जात न पाये कर तुम्हरो बायां।।
रहे सदा जो तृप्त निवासी।
प्रति फल देगा हे! जन रासी।।

"सावधान! तुम अपनी धार्मिकता के कार्य मनुष्यों को दिखाने के लिए न करो, अन्यथा अपने पिता परमेश्वर से कोई प्रतिफल प्राप्त न करोगे। "इसलिए जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही मत बजवा, जैसे पाखण्डी लोग, सभाओं और गलियों में करते हैं कि लोग उनका सम्मान करें। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पूर्ण रूप से पा चुके हैं। परन्तु जब तू दान करे तो तेरा बायाँ हाथ जानने न पाये कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है। जिससे तेरा दान गुप्त रहे, और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा।

एकांत प्रार्थना

कपटी सम विनय न कर भाई।
जो मग-चौक, सभा-बीच जाई।।
करते विनय दिखावन कन्न।
सत्य कहूँ सब तुम से हे जन!
पाय चुके वे निज फल सारे।
होंय न पिता प्रसन्न हमारे।।
पर जब जब तू निवेदन करि है।
परम ईश निज चित में धरि है।।

दोहा

मन-मंदिर में जाय के, करै बन्द सब द्वार।
अपने पितु से विनय कर, रहै जो गुप्त संझार।।

तब फल देगा तव पितु भाई।
सदा बसंत जो सब सुर-ठाई।।
विनय समय वक वक भल नाहीं।
जो करते अन्य भ्रात सदा ही।।
बहु बोले सुनै सुर-साई।
वे जन समझें निज मन माहीं।।
बनो न सो तुम उनहि समाना।
सत्य वचन ये धरु निज काना।।
मांगन पूर्व सभी वह जानहिं।
मम सन्तान क्या क्या मन चाहहिं।।
करो विनय तुम इसविधि इससे।
ही प्रसन्न तुम्हारे पितु जिससे।।

"जब तू प्रार्थना करें तो पाखण्डियों के सदृश्य न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए आराधनालयों और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना

करना उनको प्रिय लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वे अपना पूरा प्रतिफल पा चुके। परन्तु तू जब प्रार्थना करे तो अपने भीतरी कक्ष में जा और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर, और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा। और जब तू प्रार्थना करे तो ग़ैर यहूदियों की तरह अर्थहीन बातें न दोहरा, क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके अधिक बोलने से उसकी सुनी जायेगी। इसलिए उनके सदृश्य न बनना, क्योंकि तुम्हारा पिता मांगने से पूर्व ही तुम्हारी आवश्यकता को जानता है।

प्रभु की प्रार्थना

"सुर-पुर वासी पिता हमारे।
पवित्र नाम तव सभी उचारें।।
तब राज्य आये होहिं सुखारी।
सुनो जगत पिता विनय हमारी।।

मनसा तब स्वर्ग पूरत जैसी।
धरि पर भी पूरी हो वैसी।।
नित की रोटी आज हमारी।
हम को दे दे, हे करतारी।।
हमने क्षमेहि निज बैरी जैसे।
करो क्षमा हमको भी वैसे।।
करु न परीक्षा और हमारी।
टार बुराई हम से सारी।।
धन-जन-मन कुछ नहिं निज नेरे।
बल, यश, राज्य सदा ही तेरे।।

"अतः तुम इस प्रकार प्रार्थना करना : 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाये। तेरा राज्य आये। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो। हमारे दिन भर की रोटी आज हमें

दे। और जैसे हमने अपने अपराधियों को क्षमा कर; और हमें परीक्षा में न ला परन्तु बुराई से बचा, (क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। तथास्तु।')

क्षमाशीलता

यदि न क्षमहू जन-दोषन भ्राता।
तम्हें न क्षमहि तव पिता सुर-व्राता।।

दोहा

इससे निज अपराधि को, क्षमा करो तुम भ्रात।
क्षमा करेगा तुझे भी, स्वर्ग निवासी तात।।

यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा पिता परमेश्वर भी तुम्हें क्षमा करेगा। परन्तु यदि तुम मनुष्यों को क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।

वास्तविक उपवास

कपटी सदश न बन उपवासी।
न तब आनन छाय उदासी।।
वे जन निर्मित अपने आनन।
जाने जिससे उपवासी जन।।
पाय चुके वे सब फल भ्राता।
सत्य कहूँ मैं तुम से वाता।।
करो उपवास पर तुम जब ही।
रहो सृदित तब तुम सब विधि ही।
जन न जिससे तुझे उपवासी।
जाने तुव पिता 'गुप्त-निवासी'।।
गुप्त लखत जो इस गति माहीं।
प्रतिफल हित तुझे करे न नाही।।

"जब कभी तुम उपवास करो तो पाखण्डियों के समान उदास दिखाई न दो, क्योंकि वे अपना मुँह म्लान बनाये रखते हैं जिससे कि मनुष्य को उपवासी दिखाई दें। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वे अपना पूरा-पूरा प्रतिफल पा चुके। परन्तु तू जब उपवास करे तो अपने सिर पर तेल लगा और मुँह धो, जिससे कि तू मनुष्यों को उपवासी दिखाई न दे, परन्तु अपने पिता को जो गुप्त में है; और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

अपरिग्रह

निज हित नहिं धरि पर धन जोरो।
सब जन मान वचन सत् मोरो।।
जहाँ बिगारत काई कीरे।
सैंधत चोरत तस्कर धीरे।।
सूर-पूर में निज हित धन जोरहीं।

नहिं तज दीन बन्धु के द्वारहीं।।
जहाँ न बिगारत काई कीरे।
जान पावत तस्कर नीरे।।
जहां तुव धन, रहि मन जहं तेरो।
जग में फँसि, तव होय बखेरो।।

दोहा

इस कारन धन कोई जन, धरि न जोर निज हेतु।
जो जोरे तो दीन हित, मनसा भली समेतु।।

"पृथ्वी पर अपने लिए पूँजी जमा नहीं करो, जहाँ जंग लगता है, कीड़े खाते हैं और चोर सेंध लगा कर चुराते हैं। स्वर्ग में अपने लिए पूँजी जमा करो, जहाँ न तो जंग लगता है, न कीड़े खाते हैं और न चोर सेंध लगा कर चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तुम्हारी पूँजी है, वहीं तुम्हारा हृदय भी होगा।

दृष्टि की पवित्रता

तन-दीपक है आँख तुम्हारी।
उत्तम बात सुनाऊँ सारी।।
तब आँख निर्मल यदि जोये।
तो तुब सब तन ज्योति होये।
बुरी आँख यदि होय तुम्हारी।
तम बन है तब देही सारी
इस हित तुममें है जो ज्योती।
तम है यदि, तो तमही बहुती।

देह का दीपक आंख है। इसलिए यदि तेरी आंख निर्मल है, तो तेरा समस्त देह प्रकाशमान होगा। परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरी समस्त देह अंधकारमय होगी। इसलिए जो ज्योति तुझमें है यदि वही अंधकार है, तो यह अंधकार कैसा घोर होगा।

प्रभु की अनन्य शक्ति

सेव न सकैं कोई दो साई।
एक प्रेम दूसरी बैराई।।
एक सैं मिलहि, समझैं तुच्छ दूजा।
को कर सकै दुहुलन की पूजा?
इसहित मैं तुम से यह वाणी।
करत उचारन सब हित जानी।।

कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह या तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक से घनिष्टता रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

ईश्वर पर विश्वास

करो न सोच तुम निज जी का।
खाँये पीयें क्या हम नीका?
करो न सोच निज तन हेतू।
किससे ढांके काय अचेतू?
वस्त्र से देह, भोज्य से प्राना।
क्या बढ़कर तुमने नहिं जाना?

दोहा

नभ– पक्षिन को तुम लखौ, वे नहिं नाज उगाय।
नहिं काट-बटोरन करें, तो भी प्रभु खिलाय।।

नहिं अमूल्य तुम हो क्या उनसे?
वे तो हैं सब कम तुम से।।
को तुम में जो सोच बस आहीं!

निज जीवन- एक पलक बढ़ाहीं।।
देखों वन-जीवों को भाई।
बोझ उठाँय न करें कमाई।।
सभी बढ़त हरि मनसा माँहीं।
व्यर्थ सोच जन सोचे नाहीं।।
बसन हेतु क्यों सोचो भाई?
चिन्ता-चिता अग्नि दुख दाई।
जब प्रभु धरणि दूब को भाई।
ऐसे सुन्दर वस्त्र पहिराई।।
है जो आज, कल जारी जावे।
तुमको वह क्यों नहिं पहिरावे?
तुम में से इस कारन-कोई।
कहे न ऐसा चिंतित होई।।
क्या खायें हम पीयें पहिरें?

जगत देख मन में नहि झगरें।।
उस के राज्य-धर्म की भाई।
पहले खोजो भक्त की नाई।।
देगा तुम्हें ये चीजें सारी।
जान पिता तुव हित अनुसारी।।
कल हित सोच करो मत कोई।
कल हित सोच करे स्वयं सोई।।

दोहा

आजहि का दुख आज को, रहे बहुत जिय जान।
सभी समपों जो प्रभुहिं, करै तुम्हार कल्याण।।

इस कारण मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खायंगे या क्या पीयंगे; और न ही अपनी देह के लिए कि क्या प्राण भोजन से या देह वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को

देखो कि वे न तो बोते हैं, न कातते हैं और न ही खलिहानों में इकट्ठा करते हैं, फिर भी तुम्हारा पिता परमेश्वर उनको खिलाता है। क्या तुम्हारा मूल्य उनसे बढ़कर नहीं? तुम में से कौन है जो चिन्ता करके अपनी आयु एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? वस्त्र के लिए तुम क्यों चिन्ता करते हो? वन के फूलों को देखो कि वे कैसे बढ़ते हैं! वे न तो परिश्रम करते और न कातते हैं, फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से एक के समान भी वस्त्र पहिने हुये नहीं था। इसलिए यदि परमेश्वर वन की घास को जो आज है और कल भट्ठी में झोंक दी जायेगी, इस प्रकार सजाता है, तो है अल्पविश्वासियों, वह तुम्हारे लिए क्यों न इससे अधिक करेगा? इसलिए यह कह कर चिन्ता न करो, 'हम क्या खायेंगे?' क्योंकि गैरयहूदी उत्सुकता से इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, पर तुम्हारा पिता परमेश्वर जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता

की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जायेंगी। इसलिए कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है।

आत्म निरीक्षण

नहिं तुम दोषहु किन ही ताई।
कि नहिं तुम दोषी हो भाई।।
तुम जन दोपहु जिस विधि भाई।
तुम्हें दोष उस विधि हि लगाई।।
जिन नापन तुम नापहु भाई।
वही नाप तू नापा जाई।।
क्यों लखत तुम भ्रात-चखु-तृणा?
तुझे निज चखु-गिरौ सूझतिना।।

जब गिरौ तेरे हि चखु माहीं।
किस मुँह कहते भ्राता पाहीं?
ला चखु से तव गिरी निकारूं।
विकट दुखद को सभी सुहारूं।।

दोहा

रे कपटी! निज आँख का, पहले गिरी निकाल।
विधि से देख हटा सकै, भ्राता-तृण उस काल।।
पावन वस्तू कूकरन को, कभी न देहु सुजान।
फेक न निज मुतियान अरु, सूकरन आगे खान।।

सोरठा

अपने पद-तल डाल, यौं न होय रौंदे उन्हें।
सब तन देहि उजाड़, फेर पलट फाड़े तुम्हें।।

''दोष न लगाओ जिससे तुम पर भी दोष न लगाया जाये। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जायेगा। और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जायेगा। तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता या अथवा तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला, मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ,' जबकि देख, लट्ठा तो स्वयं तेरी आंख में है? हे पाखण्डी, पहले अपनी आँख का लट्ठा निकाल ले तब अपने भाई की आंख का तिनका निकालने के लिए तू स्पष्ट देख सकेगा। ''पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत फेंको, कहीं ऐसा न हो कि वे उनको पैरों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।

पितु हृदय महान

मांगो तो तुम्हें दीया जाई।
ढूँढों तो तुम पावोगे भाई।।
खटको तो तुम द्वार प्रवेशो।
करो न इसमें कुछ अंदेशो।।
मिलता उसे जो जन मांगता।
पाता वही जन जो ढूँढता।।
जो जन था द्वारे खटकाता।
उसके हित वह खोला जाता।।
अस तुम में से को जन होई?
कहोगे तुम जग में नहिं कोई।
यदि रोटी सुन पित से मांगे।।
रख हैं पत्थर उसके आगे?
मीन के मांगे सौर ब्याला?

डसै उसे, झट पकड़े काला?
बुरे बने जब निज संतानहु।
भली वस्तु ही देना जानहु।।
तब भली वस्तु पिता-गुसाई।
क्यों न देगा निज मांगन ताई?

"मांगो तो तुम्हें दिया जायेगा, ढूँढ़ोगे तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जायेगा। क्योंकि प्रत्येक जो मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूँढता है वह पाता है, और जो मिलता है, और खटखटाता है उसके लिए खोला जायेगा। तुम में ऐसा कौन है जो अपने पुत्र को जब वह रोटी मांगे तो पत्थर दे? अथवा मछली मांगे तो सांप दे? अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं और अधिक कुओं न देगा।

उत्तर आचरण

जो तू चाहत करै तब ताई।
तू ही कर वह उन संग भाई।।
भविष्यद-नियम यही मत दीन्हैं।
निज निज मन में जग-हित चीन्हें।।

इसलिए जैसा कि तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ सद्व्यवहार करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही सद् व्यवहार करो, क्योंकि व्यवस्था और नबी यही सिखाते हैं।

प्रभु पथ : सत्य मार्ग

चाकल चौड़ा वह मग द्वारा।
जावत जिससे बहु, मृत्यु मारा।।
सकरा सकेत वह मग-द्वारा।
जिससे पाते कुछ निस्तारा।।

दोहा

सकरे द्वारे प्रेम से, कपट-भार सब टार।
शीश-नाम की नाव ले, जगत-जलधि कर पार।।

"सकरे फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि विशाल है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से है जो उससे प्रवेश करते हैं। परन्तु छोटा है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है और थोड़े ही हैं जो उसे पाते हैं।

धर्म-पाखण्डियों से सचेत

(सज्जन-दुष्टों की परख)

रहो सचेत तुम भ्रात हमेशा।
तिलक धरैं, जो राखे केशा।।
भेप धरि के तुम ढिंग आवे।

भविष्यद् काल-ज्ञान करावें।।
भोले वन तुम्हें दया दिखावें।
भली बात कह के भरमावें।।
व जन भेड़-भेष में आहीं।
गुप्त भेड़िया हैं मन माहीं।।
ताहि फलों से, तुम उन्हें जानी।
सोच समझ के फिर सन्मानों।।
झर-बेरी से अंगूर न होई।
तोरे न आँस नीम से कोई।।
सुनों सभी इस कारन भ्राता।
भल तरुवर भल ही फल लाता।।
कुतरु कभी देय न फल नीके।
जानों सभी टार मल जीके।।
कुफल न भल तरु दे सकहीं।

सरस फल न कुतरु से फरहीं।।
सरस सुफल जो तरु नहिं लाता।
अग्नि हेतु, वह काटा जाता।।

"झूठे नबियों से सावधान रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे, फाड़-खाने वाले भेड़िये हैं। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या कंटीली झाड़ियों से अंगूर या कांटो से अंजीर तोड़े जाते हैं? इसी प्रकार प्रत्येक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है, परन्तु निकम्मा पेड़ बुरा फल देता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और न ही निकम्मा पेड़ अच्छा फल दे सकता है। प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है। अतः तुम उनके फलों से उन्हें पहचान लोगे।

स्वर्ग प्रवेश मार्ग

दोहा

हे प्रभु! हे प्रभु! जो रटत, गहत न प्रेम सुजान।
स्वर्ग न प्रवेशे वह कभी, वचन सत्य यह मान।।

परम पिता-मनसा पर भाइ।
चलै सदा जो आश लगाई।।
वही करेगा स्वर्ग-प्रवेशा।
यह मम वचन टरै न लेशा।।
मुझ से उस दिन कहहिं घनेरे।
हे प्रभु! हे हरि! हे भगवन! मेरे।।
क्या न तेरे नाम से साई?
भावी वाणी सबन्ह सुनाई।।

मनुजन से खल आत्म अपारा।
नहिं टारी तुव नामन द्वारा?
तुव नामन से अचरज कर्मा।
नहिं किये धर हिय सत धरमा?
तब मैं उन से खुल कर भाई।
कह दूँगा सत वचन सुनाई।।
तुमको मैंने कभी न जाना।
नहिं तुमने जग हित पहिचाना।।
दूर अब मम ढिग से भागो।
पूजक जिसके उससे माँगो।।

प्रत्येक जो मुझसे, 'हे प्रभु! हे प्रभु! कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु जो मेरे पिता परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही प्रवेश करेगा। उस दिन बहुत लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु! हे प्रभु! क्या हमने तेरे

नाम से भविष्यवाणी नहीं की और तेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किये?' तब मैं उनसे स्पष्ट कहूँगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना; हे कुकर्मियो, मुझसे दूर हटो।'

दृढ़-भक्ति

इससे वचन मेरे जो कोई।
सुन कर सदा मान है सोई।।
वह मनुष्य उस सुबुद्धि की नाईं।
चटान-भवन जिन लोग बनाई।।
वर्षा मेघ, बाढ़ें जब आई।
चली आँधियां ठोकरें खाई।।
बिगड़ा नहिं कुछ वह घर भाई।
कारण नींव चटान बनाई।।

जन वह उस निर्बुद्धि की नाई।
रेत नींव जिन भवन बनाईं
वर्षा सेह दाढ़ें जब आई।
चलीं आँधियां ठोकरें खाई।।
लगी ठोकरें उस घर पर जबहीं।
हुआ चूर वह गिरकर तबहीं।

दोहा :

इस विधि श्री मुख कहे, ख्रीष्ट यीशु उपदेश।
सब धर्मों के सार ये, प्रीत-ज्ञान संदेश।।
करे पूर्ण जब यीशु ने, निज महान उपदेश।
चकित हुई तब भीर सब, श्रद्भुत गुरु को देख।।

"इसलिए जो कोई मेरे इन वचनों को सुनकर उस पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और

मेंह बरसा, बाढ़ें आईं, आंधियां चलीं और उस घर से टकराईं; फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गयी थी। परन्तु जो कोई मेरे इन वचनों को सुनता है और उनका पालन नहीं करता, वह उस मूर्ख के समान है जिसने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, बाढ़ें आईं, आंधियां चली और उस घर से टकराईं; तब वह गिर पड़ा और पूर्णतः ध्वस्त हो गया।'' इसका परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ये बातें कह चुका तो भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई, क्योंकि वह उन्हें उनके शास्त्रियों के समान नहीं, वरन् अधिकार सहित उपदेश दे रहा था।

यीशु ग्रन्थ (बाइबल) संत मत्ती 5-7 से साभार

शत्रु से कर ले यारी

शत्रु से कर ले यारी बैरी से कर ले प्यार
ज्ञान की तेरी बातें सुन-सुन के दंग हुआ संसार
कि प्रभु तेरी शिक्षा है इतनी महान
अपनाएं मिल के हम तेरा ज्ञान

नमक समान हैं हम स्वामी दिया संदेश ये न्यारा
बिगड़ जाए गर स्वाद नमक का दुनिया करे किनारा
जग की ज्योति हमको कहा, कहा मिल के करो उजियार

जिनके शुद्ध आत्मा है वह परमात्मा को देखेंगे
नम्र है वो अधिकारी होंगे सुख वैभव भोगेंगे
बुरी नज़र नारी पे ना डालो ना लाओ बुरे विचार

धर्म का काम तू कर ले बंदे करना नहीं दिखावा
देह की चिन्ता मत करना क्या भोजन क्या पहनावा
धर्म की पहले खोज करो और राज्य का करो विस्तार

प्रभु, प्रभु जपने वाले हर कोई स्वर्ग ना जाएगा
पिता की आज्ञा पर जो चले वही स्वर्ग पाएगा
कर पाएगा ना दो स्वामियों की सेवा एक से कर ले प्यार

प्रार्थना

आदि, अनादि, अनामय, अविचल, अविनाशी,
अन्त, अनन्त, अगोचर और आनंदराशि।

तू ही सत्चित्त शुद्ध ब्रह्मरूपा, सत्य सनातन सुन्दर सुर भूपा।
तू ही स्नेह सुधामयी, तू अति गरलमना, रत्न विभुषित तू ही, तू ही आस्थिबना,

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

सतगुरु येसु आपकी महान शिक्षाओं के लिए धन्यवाद, ऐसा वर दे की मैं तेरी शिक्षाओं का पालन करना जान सकूँ, उस जीवनदायी मार्ग पर मेरी मार्गदर्शन कर मेरे दिल में आ मुझे अपना भक्त बना ले। धन्यवाद आपके असीम प्रेम के लिए।

तथास्तु

अधिक जानकारी हेतु हमें सम्पर्क करें -

मुक्तेश्वर मठ

ई-मेल : mukteshwarmath@gmail.com

मुक्तेश्वर मठ

mukteshwarmath@gmail.com

मूल्य : प्रेम पूर्वक स्वाध्याय।